अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रदत्तों का सारणीयन

4.3 प्रदत्तों के विश्लेषण का प्रस्तुतीकरण

4.4 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणाम

अध्याय 4

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

4.1 प्रस्तावना –

अनुसंधान में प्रदत्तों के संकलन, सारणीयन तथा सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के बाद प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रक्रिया में प्रदत्तों को इस प्रकार व्यवस्थित करते हैं कि वह समस्या के संबंध में वांछित परिणामों को प्रस्तुत कर सके।

प्रदत्तों का विश्लेषण वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचाता है। इसके अभाव में प्राप्त सामग्री की कोई उपयोगिता नहीं होती। समस्या के संबंध में निश्चित ज्ञान की प्राप्ति हेतु सामग्री का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है।

4.2 प्रदत्तों का सारणीयन –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाने के लिये उनका सारणीयन किया गया है। सारणीयन के द्वारा प्रदत्तों में सरलता एवं स्पष्टता आती है, वर्णनात्मक तथ्य अधिक व्यवस्थित होकर प्रदर्शन के योग्य बन जाते हैं। इसके अंतर्गत प्रदत्तों को विभिन्न स्तंभों व पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है। जिससे समझने में सुविधा होती है। सारणीयन के संबंध में किसी विचाराधीन समस्याओं को स्पष्ट करने के उद्देश्य से संख्यात्मक तथ्यों को क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की एक विधि है।

4.3 प्रदत्तों के विश्लेषण का प्रस्तुतीकरण –

प्रदत्तों का विश्लेषण शोध का महत्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। विश्लेषण से प्रदत्तों के अर्थ को सुगमता से बोधगम्य बनाया जा सकता है। शोध

परिणामों के प्रस्तुतीकरण से प्रदत्तों के परिणामों के अर्थ को देखा जा सकता है।

4.4 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणाम –

शोध समस्या के उद्देश्यों के आधार पर उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचि में तुलना की गई तथा इसका विश्लेषण तार्किक रूप से किया गया।

परिकल्पना–1

उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचि के मध्य सह–संबंध नहीं होगा।

तालिका क्र. 4.1

उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की

शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचि के मध्य सह–संबंध का विवरण

क्र. S. No.	चर 'V'	'N'	df	r
1.	शैक्षिक उपलब्धि	150	148	0.32*
2.	व्यावसायिक रूचि			

(*r गुणांक 0.01 स्तर पर सार्थक है)

प्रस्तुत तालिका से प्राप्त परिणाम के आधार पर यह कह सकते हैं कि उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचि के मध्य सार्थक संबंध है। *r गुणांक 0.32 यह बताता है कि यह धनात्मक सहसंबंध है एवं शैक्षिक उपलब्धि बढ़ने के साथ–साथ व्यावसायिक रूचि में भी परिवर्तन आता है।

परिकल्पना–2

उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्र. 4.2

उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

लिंग	विद्यार्थी संख्या 'N'	मध्यमान 'M'	प्रमाण विचलन (SD) σ	'टी' मूल्य 't'	सार्थकता
छात्र	76	54.76	10.36	0.79*	P < 0-05
छात्रायें	74	54.29	11.89		

(*'t' का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है सार्थक होने के लिये 0.05 स्तर पर 148 df पर 1.98 't' का मूल्य चाहिये)

D- 333

तालिका क्र. 4.1 से स्पष्ट होता है कि 't' का मान 0.79* है। 't' को 0.05 स्तर पर सार्थक होने के लिये आवश्यक (तालिका) मान 1.98 है। आया हुआ 't' का मूल्य इससे कम होने के कारण यह परिकल्पना क्र. 2 सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

इसलिये हम कह सकते हैं कि उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

परिकल्पना–3

उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्र. 4.3

उच्च-माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक रूचि की तुलना

लिंग	विद्यार्थी संख्या 'N'	मध्यमान 'M'	प्रमाण विचलन (SD) σ	'टी' मूल्य 't'	सार्थकता
छात्र	76	72.66	56.32	0.46*	P < 0-05
छात्रायें	74	74.66	57.24		

(*'t' का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। सार्थक होने के लिये 0.05 स्तर पर 148 df पर 1.98 't' का मूल्य चाहिये)

तालिका क्र. 4.2 से स्पष्ट होता है कि 't' का मान 0.46 है। 't' को 0.05 स्तर पर सार्थक होने के लिये आवश्यक (तालिका) मान 1.98 है। आया हुआ 't' का मूल्य इससे कम होने के कारण यह परिकल्पना क्र. 3 सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

उपरोक्त 't' मान को देखते हुए एम कह सकते हैं कि उच्च-माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्र. 4.1 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रुचि के मध्य सहसंबंध है। अर्थात शैक्षिक उपलब्धि बढ़ने से व्यावसायिक आकांक्षा का मान भी बढ़ता है।

तालिका क्र. 4.2 के परिणामों से स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई अंतर नहीं है। छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उनकी बुद्धिलब्धि एवं पठन-पाठन संबंधी आदतों का परिणाम होती हैं। विद्यालयों में अधिगम वातावरण के अवसर दोनों को समान रूप से प्राप्त होते हैं।

तालिका क्र. 4.3 में दर्शाया है कि छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक उपलब्धि के बीच कोई अंतर नहीं है। विद्यालय में समान शिक्षा प्रणाली तथा समान अधिगम अवसर प्राप्त होने के कारण तथा मिलने वाल समान अनुभवों के कारण दोनों की व्यावसायिक रूचि के मध्य अंतर नहीं है। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां सिर्फ छात्रों का ही प्रभाव है। छात्राओं में भी ऐसे क्षेत्रों के बारे में सोचना तथा उस ओर कदम उठाना शुरू कर दिया है।